माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 28 जनवरी, 2018 को लॉ भवन, चण्डीगढ में जैन समाज के 154वें मर्यादा महोत्सव में दिया गया भाषण

मुनिश्री आदरणीय विनय कुमार आलोक जी, मुनि श्री अभय कुमार जी, अग्नि अखाड़ा के महासचिव श्री सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी जी, भारतीय जनता पार्टी, चण्डीगढ के अध्यक्ष श्री संजय टंडन जी, अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा श्री वी.एस. कुण्डु जी, पंजाब सभा, चण्डीगढ सभा, आयोजन समिति के सभी सदस्यगण, अन्य उपस्थित विद्वतजन, पत्रकार साथियो, जिन छात्रों को आज सम्मानित किया है, ऐसे सभी मेरे प्यारे बच्चो!

154वां मर्यादा महोत्सव मनाने के लिये हम सब यहां पर एकत्रित हुये हैं और इस अवसर पर जो विचार व्यक्त हुये हैं, श्री संजय टंडन जी जो बोले, ब्रह्मचारी श्री सम्पूर्णानन्द जी ने जो सम्पूर्ण बात कही, पूरी तरह हम सबको आलोकित किया और जो कुछ कमी रही थी, वह पहले भी और मेरे सामने भी, इनके प्रति हम सब की असीम श्रद्धा है, ऐसे मुनि श्री विनय कुमार आलोक जी ने बहुत ही व्यावहरिक बातें हम सबके सामने कही हैं। जब कोई बात कही जाती है तो उसका पूर्ण मतलब तब होता है कि हम उससे सीख लें, कोई बोध लें, अपने अन्तःकरण में, अपने हृदय में उसको स्थापित करें और सोच–विचार करके उसको आचरण में लाएं। मुझे लगता है कि जो कुछ आपने यहां सुना है, मर्यादा महोत्सव के अवसर पर, आप निश्चित रूप से अपने लिये, देश और समाज के लिये और अन्त में राष्ट्र के मूल्यों की रक्षा करने के लिये, उसका जरूर अनुसरण करेंगे, उसे व्यवहार में लायेंगे।

यह मर्यादा शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। जानवर और मनुष्य इन दोनों में कई बातें समान होती हैं। भूख आपको लगती है तो जानवर को भी लगती है। डर आपको लगता है तो जानवर को भी लगता है। थकने के बाद आराम करने की जरूरत आपको होती है और जानवर को भी होती है। आगे सन्तति चले, पीढ़ी चले, विलुप्त न हो जाए, इसका ध्यान आपको भी रहता है और जानवरों को भी रहता है। इसलिए बहुत अच्छा श्लोक है–

आहार निद्रा भय मैथुनं च

सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषः

धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये तो इन्सान और पशु में समान है। इन्सान में विशेष केवल धर्म है, अर्थात् बिना धर्म के लोग पशुतुल्य है।

अगर कोई अधिक चीज हैं दोनों में, तो वह धर्म है, आचरण है, सयंम है, अनुशासन है। धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः– अगर यह चला गया मनुष्य में से तो मनुष्य और जानवर में कोई फर्क नहीं है। धर्म और मर्यादा, ये दो अलग–अलग शब्द हैं, लेकिन अर्थ एक ही है। धर्म आधारित, धर्माधिष्टित जीवन रचना, यह समाज के उत्कर्ष के लिए, समाज की प्रगति के लिए, बहुत जरूरी है।

भगवान ने बहुत कुछ बनाया है। लेकिन भगवान की सबसे श्रेष्ठ रचना कौन सी है? रचनायें कई हैं, लेकिन भगवान की सबसे श्रेष्ठ रचना अगर कोई है तो वह है जो हम बैठे हैं– मानव, मनुष्य। यह सबसे श्रेष्ठ रचना है। इस रचना को श्रेष्ठ बनाने के लिये उन्होंने कुछ बातें तय की हैं कि आपने अपना जीवन जीना कैसे है। How to live. और उसका पालन अगर हम नही करेंगे तो फिर जो श्रेष्ठता है, जो हमारी रचना की श्रेष्ठता है, हम श्रेष्ठ रचना हैं वह श्रेष्ठता हमारी समाप्त हो जायेगी। जरा विचार कीजिए कि आपका निर्माण करते समय मनुष्य की जितनी आवश्यकताएं हैं, उन सबकी रचना भी भगवान ने की है। इसलिए उन्होंने व्यक्ति के साथ परिवार की रचना की, समाज की रचना की, समाज के मानदण्डों की रचना की, समाज के मूल्यों की रचना की और यह सब कुछ ठीक चलता रहे इसलिए सृष्टि की रचना की।

इसलिए बहुत सुन्दर चार शब्द आते हैं– ब्रह्मष्टि, समष्टि, सृष्टि। ब्रह्मष्टि यानी व्यक्ति होता है और व्यक्तियों का समूह समाज बनता है। यानीकि समष्टि और इस सब के लिये ब्रहष्टि, समष्टि के लिये ईश्वर ने सृष्टि को बनाया है। ब्रह्मष्टि, समष्टि, सृष्टि के बाद चौथा शब्द है–परमेष्टि। परमेष्टि परमात्मा हैं। इन चारों का बहुत गहरा सम्बन्ध है। ब्रह्मष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि का बहुत बड़ा सम्बन्ध है, बहुत बड़ा सन्तुलन है, बहुत बड़ा समन्वय है, coordination है। अगर यह सन्तुलन, समन्वय, coordination नहीं रहेगा तो भूकंप आयेगा, प्रलय होगी। इसलिए अगर इनका सन्तुलन रखना है, सब कुछ बराबर बनाकर रखना है, आपको जिंदा भी रहना है तो फिर उसकी कीमत चुकानी पड़ेगी और वह कीमत है–मर्यादा अर्थात अपनी सीमा में रहिए।

आपको पूरी स्वतंत्रता है। आप पैर चला सकते हैं, आप हाथ घुमा सकते हैं। लेकिन जब आप हाथ घुमा रहे हैं तब इसका ध्यान रखें कि हाथ से किसी को चोट तो नहीं लग जाएगी, किसी का नुकसान तो नहीं हो जाएगा। इसका ध्यान रखिए। अगर आप इसका ध्यान नहीं रखेंगे तो फिर कानून है और कानून से भी बड़ा भगवान है। किए हुये कर्मों का फल आपको इसी जन्म में भुगतना पड़ेगा। इस मनुष्य के बारे में ऐसा कुछ कहा है कि यह बड़ा महान है क्योंकि इसकी रचना महान है। मनुष्य तू बड़ा महान है, तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है।

आप प्रार्थना करते हो न परमेष्टि से? प्रार्थना करते हो परमात्मा से कि हे दुखनाशक, शान्तिदाता, मेरे अन्तःकरण में आकर विराजित हो जाओ। आत्मा में स्वयं भगवान हैं। मेरे अन्तःकरण में आकर विराजित हो जाओ और अन्तःकरण में विराजित होकर मुझे सदकर्म, अच्छे कर्म, सही रास्ता, उचित रास्ता, कानून का रास्ता, शान्ति का रास्ता, उस पर चलने के लिये प्रेरित करते रहें। कभी मैं रास्ता न भटकूं। ये सब चीजें मर्यादा हैं। जरा विचार तो करो कि अगर सब लोग अपनी मर्यादा समझ लें, अपनी सीमा समझ लें, दूसरे का हक समझ लें, तो समाज कैसा बन जाएगा। इसलिए मैं नहीं तू–यह हमारी पहचान है, यह हमारी संस्कृति है। भारत तो पूरे विश्व में ही मर्यादा के लिये जाना जाता हैं। कभी भारत ने मर्यादा नहीं तोड़ी। कभी भारत ने किसी पर आक्रमण नहीं किया। बल्कि उलटा कहीं से कोई प्रताड़ित होकर आया तो भारत ने उसको शरण दी और अपने अन्दर पचा लिया। इतिहास तो देखो भारत का।

यहां पर कितने लोग आए, यहां पर शक आए, हूण आए, यहां पर कुषाण आए, यहां पर पर्सियन आए, यहां पर पारसी आए। पता नहीं कौन–कौन आया। सबको भारत ने समा लिया। इसलिए भारत पूरे विश्व के अन्दर मर्यादा के लिए जाना जाता है, अनुशासन के लिए जाना है कि यह आध्यात्मिक देश है, यह मर्यादा में चलता है, अनुशासन में चलता है।

इसलिए हम सोच सकते हैं कि हम सबके लिए मर्यादा कितनी जरूरी है। आज तो उसकी बहुत ज्यादा जरूरत है। भगवान राम वनवास पर क्यों गये? महाराणा प्रताप जंगल में फिरते रहे, ठोकरें खाते रहे, रोटी तक सम्भव नहीं हुई। गुरू गोविन्द सिहं जी ने पिता को ही नहीं बल्कि चारों बच्चों को बलिदान कर दिया। महाभारत का इतना बड़ा युद्व क्यों हुआ? यह सब इसलिए हुआ क्योंकि मर्यादा टूटी। मर्यादा अगर नहीं टूटती तो यह सब नहीं होता। इसलिए मर्यादा के अनुसार चलना, मर्यादा को स्थापित करना, यह आज का नहीं, यह भूतकाल का नहीं, यह हमेशा की जरूरत है। समाज को अगर ठीक से चलाना है तो जियो और जीने दो, यह भारत का सिद्वांत है। जियो और जीने दो– मतलब तुम भी जीयो और दूसरों को भी जीने दो। लेकिन इसके लिए आवश्यक शर्त क्या है– मर्यादा। अगर आप मर्यादा में नहीं रहेंगे तो फिर जीयो और जीने दो के सिद्वांत का पालन नहीं हो पाएगा। दो–तीन उदाहरण यहां पर बहुत अच्छे आए हैं। आप दूसरे की चिन्ता तो कर ही नहीं रहे। दूसरे को छोड़ो पुत्र पिता की ही चिन्ता नहीं करता। आदरणीय विनय कुमार जी ने बहुत अच्छा प्रकाश इस पर डाला। एक बहुत सुन्दर कविता है, उसका मतलब भी कुछ इस तरह का है–

एक पुत्र ने अपने पिता जी को कहा कि आप रातभर खांसते हैं, हमारी नींद हराम होती है। हम लोग शान्ति से सो नहीं पाते तो आपको अगर बुरा न लगे तो वृद्ध आश्रम में छोड़ आएं। आप जरा विचार करें जब पुत्र पिता को यह कहेगा तो पिता क्या कहेगा? पिता ने कहा–जैसी तुम्हारी इच्छा। पुत्र पिता जी से पूछता है कि गाड़ी में ले चलें या आटो मंगवा लें। पिता ने कहा–कार क्यों ले चलते हो, खर्चा ज्यादा होगा, आटो मंगवा लो। बाद में सोचकर उसने कहा–आटो क्यों मंगवा रहे हो पास में ही है वृद्व आश्रम, पैदल ही चल पड़ेंगे। आप जरा पिता जी का व्यवहार देखिए और इनका व्यवहार देखिए।

लेकिन ज्ञान जब उम्र बढ़ती है तब आता हैं। जब पैदल चले तो बीच में पिता जी ने कहा कि जरा आराम कर लूं, मैं थक गया हूं। पुत्र ने कहा–ठीक है, तो पत्थर पर जाकर बैठ गए और पत्थर पर जाकर बैठ कर सोचने लगे। पुत्र ने पिता जी से पूछा– क्या सोच रहे हैं? मै भूतकाल की सोच रहा हूं। भूतकाल की क्या सोच रहें हैं? जब मेरे पिता वृद्व हुए तो मैं भी अपने पिता जी को इसी तरह वृद्ध आश्रम में ले जाने के लिए इसी रास्ते से लाया था। जब मैं उनको ला रहा था तो मेरे पिता भी इसी पत्थर पर बैठे थे। अब मैं उसी पत्थर पर बैठकर सोच रहा हूं कि जो मैने अपने पिता जी के साथ किया था वही मेरे साथ हो रहा है और तू भी चिन्ता मत कर तेरे साथ भी यही होगा। यह घर–घर की कहानी है।

आज मैने अखबार में पढ़ा–प्रो0 चावला, पंजाब युनिवर्सिटी के, वे बेचारे लायब्रेरी में बाहर ठंड में बैठे रहते हैं और इतनी ठंड में बीमार हो गए तो वहां के विद्यार्थी उन्हें

अस्पताल ले गए। हालत अच्छी नहीं है। जब मैने पढा तब सोचा कि क्या कहें अब, कहां है मर्यादा?

और भारत जिस चीज के लिए जाना जाता है– मैं नहीं तू, जीयो और जीने दो। ये भारत की दो आत्मायें हैं, भारत की पहचान हैं और इस मर्यादा की रक्षा करने के लिए हमारे देश के, हमारे राष्ट्र के, हमारे समाज के इतने संत हैं। वे अनथक, सदैव घूमते रहते हैं। इस देश की पहचान को संतों ने ही बचाया है। इसलिए तेरा पंथ, धर्मसंग इसके जो प्रवर्तक हैं आचार्य तुलसी, और यह सब आचार्य तुलसी जी ने भी किया। आप पढिए जरा उसको देखिए। अगर आप उसको अपनाते हैं तो जीवन सार्थक ही नहीं होगा, आप आदमी से देवता बन जाएंगे। इसमें आपका भी उत्कर्ष है। इसमें समाज का भी उत्कर्ष है और राष्ट्र का भी भला है। इसलिए तेरा पंथ समिति द्वारा प्रतिवर्ष जो मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है, इसकी कितनी आवश्यकता है? और इसकी आवश्यकता तो है ही लेकिन उसके बताए हुए मार्ग पर चलना हमारे लिए कितना जरूरी है? अगर आप उस मार्ग पर नहीं चलते हैं तो आप आदमी नहीं, आप चलते फिरते जानवर हैं।

यह शिक्षा हमारे बच्चों को देने की बहुत जरूरत है। ये प्रतिभाशाली बच्चे जिनको आज सम्मानित किया गया। आखिर उनको यह प्रतिभा मिली है तो क्यों मिली है? क्योंकि ये सयंम से चलते हैं। ये अनुशासन में रहते हैं। भारत वर्ष के लिए आज की स्थिति में, इक्कीसवीं शताब्दी में इसकी बहुत जरूरत है, क्योंकि यह युवा देश है। पूरे विश्व में अगर युवा देश है तो वह भारत है। यहां पैंतीस वर्ष की आयु तक के 65 प्रतिशत लोग रहते हैं। इसलिए अगर वे मर्यादा में चलते हैं तब फिर देखिए समाज की स्थिति कैसी बनेगी। किसी भी गांव के, किसी भी शहर के, सारे लोग अगर मर्यादित हो जाएं। इसलिए मर्यादा महोत्सव, इसका आयोजन, पंजाब सभा, चंडीगढ सभा, आयोजन समिति, इन सबके प्रति हमें कर्तज्ञता व्यक्त करनी चाहिए कि हमें मनुष्य की पहचान बताने का, मनुष्य के नाते जीवन बताने का, एक बहुत अच्छा मार्ग ये प्रशस्त करते हैं।

जयहिन्द!